नवयुग प्रवर्तक पिताश्री ब्रह्मा

- ब्र.कु. दीपचंद

पिताश्री सम्पूर्ण होने से पूर्व एक ऐसा दीपक जगा गये जो कभी नहीं बुझेगा। वह दीपक उनकी पवित्रता का दीपक है, जिसको पिताश्री जी ने अपनी योगाग्नि से जलाया और जिसको उनका योगबल द्वार-द्वार लिए फिर रहा है।

यह विधि का विधान रहा है कि समय-समय पर इस सृष्टि की हालत ठीक करने किसी न किसी महापुरूष, महात्मा या धर्म-स्थापक का जन्म होता रहता है। ये महापुरूष या पैगम्बर इस सृष्टि में कुछ सुधार करते तो अवश्य हैं परन्तु वह सुधार स्थाई नहीं हो पाता। भिन्न-भिन्न महापुरूषों द्वारा भिन्न-भिन्न समय में सुधारी गई इस सृष्टि की जब ऐसी दशा हो जाती है कि इसमें सुधार करना उन महापुरूषों के वश के बहार हो जाता है तो तब फिर स्वयं परमपिता परमात्मा को ही यहाँ आना पडता है। परमात्मा यहाँ आकर इस सृष्टि को ऐसा परिवर्तित करते हैं कि फिर एक निश्चित किन्तु लम्बी अवधि तक इसमें सुधार करने की आवश्यकता नही रहती । इस प्रकार ईश्वर पिता को इस सृष्टि पर निकृष्ट अवस्था के समय आना पडता है। इस सृष्टि पर ईश्वर पिता के आगमन को अवतार कहा जाता है। परमात्मा पुनर्जन्म-मरण के चक्कर से न्यारा है अत: वह कभी भी माता के गर्भ से जन्म नहीं लेता तथापि स्वयं निराकार होने के कारण वह एक साधारण मानवीय तन का आधार लेकर, गीताज्ञान सुना कर फिर से इस सृष्टि को पतित से पावन बनाने का दिव्य कर्त्तव्य करते हैं। जिस तन में परमात्मा अवतरित होते हैं उसका नाम वे प्रजापिता ब्रह्मा रखते हैं क्योंकि इनके मुख द्वारा ही ज्ञान सुना कर उनको नई सृष्टि की रचना रचनी होती है। प्रजापिता ब्रह्मा, जोकि नई सृष्टि की स्थापना के निमित्त बनते हैं, प्रत्येक मनुष्य के अलौकिक पिता होने के कारण, 'पिताश्री' कहलाते हैं।

अपने अनुभव कें आधार पर, कल्याणकारी पिता की सन्तान होने के कारण, हम आपको यह सन्देश देना चाहते हैं कि अब मानव सृष्टि में जबकि सर्वत्र अशान्ति का बोल-बाला है, धर्म की अति ग्लानि हो चुकी है, पापाचार, भ्रष्टाचार अपनी निकृष्टतम सीमा पर पहुँच चुके हैं तो अब इस सृष्टि के पुनरोत्थान के लिए परमात्मा शिव अवतरित हो चुके हैं और वे सन् 1937 से लकर प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा इस सृष्टि के नवीनीकरण में द्रुतगति से कार्य कर रहे हैं। इस कार्य के लिए परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा, जोकि इस सृष्टि नाटक के मुख्य पात्र हैं और जोकि इस सृष्टि की सतोप्रधान अवस्था-सतयुग में विश्व महाराजन् श्री नारायण थे, के शरीर (रथ) का आधार लिया है। परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना करके सच्चा आध्यात्मिक ज्ञान (गीता ज्ञान) देते हैं। आध्यात्मिक मुख-वंशावली सन्तान के प्रिय पिता, पिताश्री जी परमात्मा को अपना सम्पूर्ण तन-मन-धन न्योछावर करके उनके निर्देशानुसार श्रीमत पर चल कर उनके कार्य में सहयोग देते हैं।

1937 में जब ईश्वर पिता ने पिताश्री के शरीर का आधार लिया उस समय पिताश्री जी 60 वर्ष के थे।

एक आध्यात्मिक ऊर्जा-गृह थे

पिताश्री जी एक चैतन्य आध्यात्मिक प्रकाश एवं ऊर्जा-गृह थे। उन्होंने आध्यात्मिक प्यार एवं ऊर्जा का स्फुरण किया। जो भी उनके

सम्पर्क में आये वे अपने में महान् परिवर्तन पाते थे। मानव जाति के लिये उनका प्यार असीम था। वे प्रतिदिन सैंकडों नर-नारियों की आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे (ज्ञान योग की शिक्षा देते थे) एवं प्रत्येक ऐसा समझते थे कि बस पिताश्री उसको ही सबसे अधिक प्यार करते हैं। वे प्यार की सौम्य मूर्ति थे एवं कभी भी किसी को तुच्छ या घृणित नहीं समझते थे। अपने विरोधियों को भी अथाह प्यार करते थे। पिताश्री जी! बहुत से विरोधी व्यक्तियों उनके इस आध्यात्मिक आन्दोलन को पसन्द नहीं किया और उनके इस कार्य में उनके बच्चों के समक्ष अवरोध उत्पन्न किया परन्तु पिताश्री थे कि बिल्कुल भी घबराये नहीं बल्कि साहसपूर्वक कठिनाइयों का सामना किया। एक बार एक समाचार पत्र वाले ने बिल्कुल असत्य खबर छापी परन्तु पिताश्री ने जिस नगर से वह अखबार निकलता था वहाँ के ईश्वरीय सेवा स्थान के इन्चार्ज को लिखा कि उस अखबार के सम्पादक का धन्यवाद करो। कितने महान थे पिताश्री जी !

एक अनासक्त कर्मयोगी थे

बाबा (पिताश्री जी) प्रात:काल से लेकर काफी रात्रि तक अपने को व्यस्त रखते थे। किसी समय वे अपने आध्यात्मिक बच्चों को उनकी समस्याओं का हल बताते हुए मिलते तो किसी समय में विश्वविद्यालय की रसोई के कार्य में

रूचि लेते होते। कभी वे सेवा-केन्द्रों के अपने बच्चों को निर्देश भरे पत्र लिखते। इस तरह पिताश्री कार्य में काफी व्यस्त रहते थे, परन्तु हर कार्य वे अनासक्त भाव से करते थे। वे इस संसार की वस्तुओं को बडें हल्के एवं आध्यात्मिक प्रकाश से परिपूर्ण भाव से देखते थे। इस संसार में रहते हुए एवं अपने कर्त्तव्यों को करते हुए भी उनका मन हमेशा इनसे अलग रहता एवं परमात्मा की स्मृति में खोया रहता था। वे कभी भी माया (पाँच विकारों) से नहीं डरते थे, बल्कि उसको चुनौती देते थे अपने साथ लडने की। इतना आत्म–विश्वास था पिताश्री को अपने ऊपर ! अवस्था में भी वृद्ध जबकि दूसरे मनुष्य इस अवस्था में आराम को तिलांजलि देकर मानव-जाति के आध्यात्मिक उत्थान के अति कठिन उत्तरदायित्व को अपने कन्धों पर उठाया। जब पिताश्री जी अव्यक्त हुए तब उस समय उनकी आयु 93 वर्ष की थी।

पिताश्री जी ने पवित्रता के व्रत का पालन दृढता से कराया

यद्यपि प्रत्येक ग्रन्थ एवं शास्त्र में मनुष्यों को पवित्रता का आदेश दिया गया है परन्तु आज के देह-अभिमानी मनुष्य इस कलियुगी समय में पवित्र रह सकना असम्भव बताते हैं बाबा ने परमात्मा शिव के निर्देशानुसार मन, वचन एवं कर्म से सम्पूर्ण पवित्र बनने की घोषणा की। आज हजारों नर-नारियों ने पवित्रता की प्रतिज्ञा ली हुई है एवं गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए भी सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन कर रहे हैं। साँसारिक मनुष्यों को यह बडी ही अद्‌भुत एवं रहस्यमय बात लगती है। हजारों माताओं-बहनों ने जीवन पर्यन्त पवित्रता को पालन करने का व्रत लेकर आध्यात्मिक उत्थान के लिए अपना जीवन समपर्ण किया है। इन्हीं का कार्य इस संसार के मुख को परिवर्तित करेगा।

अलौकिक कर्त्तव्य एवं उनसे लाभ

पिताश्री जी का जीवन आदर्श जीवन था। 35 वर्ष तक उन्होंन अपना जीवन समर्पित रूप से इस सृष्टि पर सतयुग की स्थापना के महान पवित्र कार्य में लगाया। वे ज्ञान-संसार के ज्ञान जल की नदी में खूब गहरे तक गए एवं ज्ञान-रत्नों को लाकर सबको वितरित किया। मानव-जाति के कल्याण लिये, उन्होंने ईश्वर पिता की मीठी याद में योग-युक्त रह कर एक निराला पार्ट अदा किया। वे आध्यात्मिक दिव्य गणों तथा शक्ति से परिपूर्ण थे। उनके विचार, कार्य एवं शब्द हमेशा प्रेरणादायक होते थे। जन-जागरण के लिए पिताश्री जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन को लगा दिया एवं एक आध्यात्मिक क्रान्ति उत्पन्न की। वे हमेशा ईश्वरीय सेवा में तत्पर रहते एवं अथक परिश्रम के बाद भी कभी न थकते थे। मनुष्यात्माओं की बुझी हुई ज्योति को प्रज्वलित करने के लिए एवं उन्हें विकारों से मुक्ति दिलाने पिताश्री जी ने ईश्वर पिता के निर्देशानुसार ज्ञान-यज्ञ की ज्वाला प्रज्वलित की। पिताश्री जी ने एक आदर्श नायक के रूप में ज्ञान यज्ञ की सम्भाल करते हुए, दूसरों की आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने का अलौकिक कर्त्तव्य किया। उनके द्वारा व्यक्ति, समाज एवं देश सभी के हित के लिए बहुत ही कल्याणकारी कार्य हुआ। पिताश्री जी के मीठे उपदेशों को सुन-सुन कर मानव मस्तिष्क में नवयुग के उदय करने की प्रेरणा का संचार हुआ। पिताश्री द्वारा हुएअलौकिक कर्त्तव्यों से समाज सुधार हुआ एवं अनेक लाभ हुए जो निम्नलिखत हैं —

चारित्रक उत्थान एवं भ्रष्टाचार उन्मूलन

पिताश्री जी के माध्यम से ईश्वरीय ज्ञान मनुष्यात्माओं को मिला जिससे उन्हें 'स्व' का परिचय मिला। परमात्मा, सृष्टि-चक्र आदि का ज्ञान मिला। जिस द्वारा अपने वास्तविक

पेज 10 पर..

जहां भय होगा वहां खुशी नहीं होगी

प्रश्न:- मेरा उद्देश्य होता है कि मेरा बॉस मुझसे खुश रहे।

उत्तर:- यह तो भय है। जहां भय होगी वहां स्थिरता नहीं होगी। क्योंकि जैसे ही भय क्रियेट होता है तो आप चेक करे कि हमारे अंदर किस प्रकार के थॉट चल रहे हैं? आप पायेंगे कि वह हमेशा नेगेटिव ही होता है। इतना सब कुछ करते हुए, इतनी मेहनत करते हुए हम खुश नहीं हैं तो इसका सिर्फ एक ही कारण है 'निर्भरता' इसे हमने अपने जीवन से जोड़ दिया है। जैसे-जैसे आप अपनी एक-एक चीज से निर्भरता हटाते जायेंगे तो आप पायेंगे की हमारी खुशी इन सब चीजों पर निर्भर नहीं थी। हम अपने-आपको सारा दिन परिस्थितियों पर, लोगों पर, वस्तुओं पर, न मालूम किन-किन चीजों पर निर्भर करके रखा है। जब हम इतनी चीजों पर निर्भर होंगे तो खुशी.....? तो फिर हमारा जीवन डर में बीतता है। अगर मेरी खुशी शारीरिक स्वास्थ्य पर निर्भर है तो हमेशा कौन-सा भय बना रहेगा?

प्रश्न:- कहीं मुझे कुछ हो न जाये। इसका मतलब ये हुआ कि मेरी निर्भरता उस बात पर थी तो फिर मैं जो उनके लिए करती आ रही हूँ, किसी के लिए भी वो मैं नहीं करूंगी।

उत्तर:- एक है जो मैं बाहर करती हूँ और एक है जो मैं करते हुए अंदर अनुभव करती हूँ। आपके लिए मैं बहुत कुछ कर रही हूँ जैसे कि मैं आपके लिए अच्छा खाना बना रही हूँ, लेकिन मैं अंदर से कैसा अनुभव कर रही हूँ! अगर मैं डर में हूँ तो कौन-सी वायब्रेशन्स क्रियेट होगी, अगर मैं असुरक्षित हूँ तो कैसी फीलिंग आयेगी, इससे कौन-सी वायब्रेशन्स क्रियेट होने वाली है? क्योंकि ये सारा कार्य तो मैं ऊपर से आपको खुश करने के लिए कर रही हूँ। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि उस समय कौनसी एनर्जी क्रियेट हो रही है, क्योंकि इसी पर हमारा आज का आधारभूत सम्बन्ध

निर्भर करता है। हम इतनी मेहनत करते हुए भी उतने शक्तिशाली नहीं हैं जितने होने चाहिए क्योंकि आज हम शायद बाहर से पहले से कई गुणा ज्यादा काम कर रहे हैं। आप पिता और बच्चों को ही देखो की बच्चों को तो ज्यादा कुछ नहीं हो रहा, आराम से बड़े हो रहे हैं। आज तो पैरेंट इतना कुछ कर रहे हैं अपने बच्चों के लिए, लेकिन करते हुए जो एनर्जी क्रियेट करते हैं वो बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि आज हम उनको खुश करने के लिए बहुत कुछ करते हैं। अब एक पति और पत्नी को ही देखो, दोनों जॉब में हैं। दोनों को अंदर से ये अनुभव होता है कि हम अपने बच्चों को उतना समय नहीं दे पाते हैं जितना देना चाहिए। जब मैं घर आती हूँ तो मैं और ज्यादा प्रयास करती हूँ कि मैं क्या करूं कि आपको खुश कर सकूं। मैं जितनी देर आपसे मिलती हूँ ना आपकी हर बात मान लूं, आपको जो चाहिए वो मैं आपको दे दूं। आपको किसी भी तरह मैं खुश कर दूं। एक तो मैं अपनी गलती भी खत्म कर सकूं और दूसरा आप शिकायत भी न करें। इससे सम्बन्ध तो बहुत अच्छा हो गया लेकिन इसको करने से मैंने बच्चे का फायदा करने की बजाय और ही उसका नुकसान कर दिया। हमें पता नहीं चल रहा है क्योंकि मुझे लग रहा है कि मैं हर चीज जो कर रही हूँ बच्चे के फायदे के लिए कर रही हूँ। हमारा उद्देश्य तो बहुत अच्छा था लेकिन वो गिल्ट की एनर्जी क्रियेट करके किया जा रहा है तो उसका परिणाम कैसा होगा? अब जैसे आपके लिए कुछ करने की बात आयी। सपोज अब मुझे ये लग रहा है कि मेरी खुशी आप पर निर्भर नहीं है। मैं स्वयं अपनी खुशी को क्रियेट कर सकती हूँ। मुझे खुद खुश रहने के लिए आपको खुश करने की आवश्यकता नहीं है। इसमें महत्वपूर्ण बात यह है कि जब हमारे अंदर अच्छी एनर्जी होगी तो मुझे डर और असुरक्षा की भावना नहीं होगी और मैं स्वयं को स्टेबल महसूस करूंगी माना कि मैं अंदर से खुशी, प्यार और शांति से भरपूर रहूंगी। प्यार कुछ करने से नहीं होता है। प्यार होता है अनुभव करने में। जब आप आओ तो मैं आपको अच्छी तरह से खाना बनाकर खिलाऊं, प्यार से बातें करूं ये प्यार की फीलिंग है। किसी के लिए भी ये करना बहुत आसान है। कोई आ रहा है आप दस चीजें बना दो खाने के लिए, लेकिन अंदर कौन-सी क्वालिटी की एनर्जी क्रियेट हुई इसका भी ध्यान रखना है। जब अंदर पॉजीटिव एनर्जी क्रियेट होगी, तो हमारे कर्म कभी भी गलत नहीं होंगे। - क्रमश: